REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 15 | ISSUE - 5 | FEBRUARY - 2026

जैनेन्द्र के कथा साहित्य में नारी संघर्षः स्वरूप और विश्लेषण

प्रवीण कुमार सुपुत्र श्री विनोद कुमार
एम.ए. हिन्दी, नेट (हिन्दी), गांव कैरांवाली डॉ. माखोसरानी जिला सिरसा, हरियाणा.

शोध आलेख सार

जैनेन्द्र यथार्थवादी एवं संवेदनशील रचनाकार हैं। उनके साहित्य में नारी मुक्ति एवं नारी संघर्ष की कथा विद्यमान है। स्त्री–पुरुष के संबंधों की मूलभूतता के संदर्भ में यह अखंड सत्य है कि नर में नारी की और नारी में नर की तलाश बनी रहती है। दो विपरीत ध्रुव होने के बाद भी एक–दूसरे की आवश्यकता, अपरिहार्य है। स्त्री–पुरुष के अंतर्मन की पीड़ा को अपनी कहानी कला का सहारा देकर जैनेन्द्र ने एक नये मार्ग पर ला खड़ा किया है। यद्यपि उनका दृष्टिकोण बौद्धिक है तथापि उनमें आधुनिक मनोविज्ञान के शास्त्रीय सिद्धान्तों का आग्रह अधिक है। नर–नारी संबंधों को विभिन्न रचनाकारों ने अपनी रचनाओं का वर्ण्य विषय बनाया है। जैनेन्द्र जी के अधिकांश उपन्यासों की मूल समस्या नारी और उसके प्रेम तथा विवाह से जुड़ी हुई है। जैनेंद्र की कहानियों की स्त्री पात्र रिश्तों की बुनियाद सच्चाई की तराजू पर तौलना और परखना चाहती है। वह किसी के साथ छलावा नहीं करती है।

मूल शब्द– नारी मुक्ति, नारी संघर्ष, बौद्धिक, आधुनिक, संबंध, विषय।

प्रस्तावना

जैनेन्द्र कुमार के सम्पूर्ण हिंदी कथा–साहित्य में नारी पात्र बहुत चर्चा में रहे हैं। ये पात्र जितने उल्लेखनीय हैं, उतने ही विवादास्पद भी हैं। उनके कथा–साहित्य, और विशेष रूप से उपन्यासों में नारी पात्र पाठकों के सामने सबसे प्रमुख और प्रभावशाली रूप से उभरते हैं। जैनेन्द्र की आरंभिक तीन रचनाओं 'परख' (1929), 'त्यागपत्र' (1937) और 'सुनीता' (1935) की केन्द्र बिंदु स्त्री है। ये स्त्रियाँ प्रायः प्रेम करती हैं। ये स्त्रियाँ विचारशील होने के साथ ही कर्मठ भी हैं। वे अपने पारिवारिक और सामाजिक दायित्वों का निर्वाह करती हैं। ये स्त्रियाँ पारिवारिक मर्यादा, परंपरा और नियमों के पाखंडी रूप को तोड़ती हैं और जीतने–हारने और संघर्ष करने के लिए परंपरागत स्त्री के चोले से बाहर निकल आती हैं। 'त्यागपत्र' में जैनेन्द्र की साहित्यिक चेतना अपने चरम पर है। मृणाल के चरित्र, संघर्ष और त्रासदी ने उसके व्यक्तित्व को अद्‌भुत ऊँचाई प्रदान की है। 'त्यागपत्र' में आधुनिक हिंदी गद्य साहित्य का सशक्त स्त्री विमर्श दिखाई देता है, जिसे केवल स्त्रियाँ ही कर सकती हैं। जैनेन्द्र ने अपने उपन्यासों और कहानियों में आए नारी पात्रों के माध्यम से स्पष्ट किया है कि शारीरिक पतन अनिवार्यतः चारित्रिक पतन नहीं होता। यही कारण है कि उनके नारी पात्र सतीत्व में विश्वास नहीं करते हैं और यौन व्यवहार में उन्मुक्त हैं। जैनेन्द्र ने अपनी कहानियों में कई स्त्री पात्रों के किरदार गढ़े हैं जो दिखने में

कमजोर और शोषित हैं, लेकिन उनका आंतरिक व्यक्तित्व अत्यंत मजबूत और निर्भीक है। जैनेन्द्र की नायिकाएं साहसी, दृढ़ निश्चयी और स्वतंत्र होती हैं, जो अपने जीवन की चुनौतियों का सामना बिना किसी डर के करती हैं। उनकी कहानियों में महिलाएं केवल पुरुषों की इच्छाओं की पूर्ति करने वाली वस्तु नहीं हैं, बल्कि वे स्वतंत्र हैं जो अपनी जिंदगी की दिशा खुद तय करती हैं। सुनीता और मृणाल इस बात के स्पष्ट उदाहरण हैं।

जैनेन्द्र जी के कथा–साहित्य में नारी जीवन के सभी कोणों से चित्र खीचे गये हैं। उन्होंने नारी जीवन के हर पक्ष को अपनी लेखनी से चित्रित किया है। उन्होंने सामाजिक मूल्यों के समानान्तर मानवीय सम्बन्धों के माध्यम से नये मानवीय आयाम की खोज की। यह खोज आदर्श की स्थापना की न होकर यथार्थ पक्ष की थी।[1] जैनेन्द्र के साहित्य में संबंधों का यथार्थ रूप प्रस्तुत किया गया है। कमलेश्वर ने जैनेन्द्र के बारे में लिखा है, "जैनेंद्र यथार्थ की रचना करते थे। उनकी बहुसंख्यक कथा रचना की मूल जड़ें यथार्थ की धरती में फैली हुई थी और वहीं से अपनी शक्ति ग्रहण करती थी। वे मानवीय मूल्यों की अवधारणा के बीच व्यक्ति में सत्य को भी खंडित होने से बचा रहे थे।"[2]

जैनेन्द्र कुमार महिलाओं को 'सर्वस्व' के रूप में स्वीकार करते हैं। इस रूप को अपनाने से ही 'नारी' संपूर्ण संसार का आधार स्तंभ बन जाती है। उनका मानना है–'स्त्री ही व्यक्ति को बनाती है, घर को, कुटुम्ब को बनाती है। फिर उन्हें बिगाड़ती भी वही है।.....धर्म स्त्री पर टिका है, सभ्यता स्त्री पर निर्भर है और फ़ैशन की जड़ भी वही है। एक शब्द में कहो,.....दुनिया स्त्री पर टिकी है।[3] उनके सभी उपन्यासों में मुख्य पुरुष पात्र शक्तिशाली क्रांति के समर्थक होते हैं। बाहरी स्वभाव, रूचि और व्यवहार में एक तरह की कोमलता और भय की भावना होने के बावजूद वे अपने अंदर महान विध्वंसक होते हैं। उनका यह विध्वंसकारी व्यक्तित्व नारी के प्रेम विषयक अनादर की प्रतिक्रिया से बनता है। इसी कारण जब उन्हें किसी नारी का थोड़ा भी सहारा, सहानुभूति या प्रेम मिल जाता है, तब टूट कर गिर जाते हैं और तभी उनका बाहरी स्वरूप कोमल हो जाता है। जैनेन्द्र के नारी पात्र अक्सर उपन्यास में मुख्य भूमिका निभाते हैं।

जैनेन्द्र जी ने अपने उपन्यासों के माध्यम से स्त्रियों की मनोदशा को स्पष्ट किया है। स्त्रियों की शिक्षा–दीक्षा और पारिवारिक परिस्थितियो मे मध्य स्त्री–जीवन की वास्तविकताओं को समाज के समक्ष प्रस्तुत करने का श्रेय जैनेन्द्र जी को ही जाता है।[4] उन्होंने स्त्री पात्रों के चित्रण में गहरी मनोवैज्ञानिक समझ का परिचय दिया है। उन्होंने महिला के विभिन्न रूपों, उनकी क्षमताओं और प्रतिक्रियाओं को प्रामाणिक रूप से प्रस्तुत किया है। "सुनीता", "त्यागपत्र" और "सुखदा" जैसे उपन्यासों में ऐसे कई उदाहरण हैं जहाँ उनकी नारी पात्र गहन मानसिक संघर्ष का सामना करते नज़र आते हैं। नारी और पुरुष की अपूर्णता और पारस्परिक निर्भरता इस संघर्ष का मूल आधार है। महिला पात्र पुरुषों के प्रति अपने आकर्षण को समझती हैं, समर्पण के लिए तैयार रहती हैं और इस पूरक भूमिका से खुशी पाती हैं। लेकिन कभी–कभी, जब वे पुरुषों में इस मोह के अभाव को देखती हैं, तो वे परेशान और दुखी हो जाती हैं। उसी तरह, जब उन्हें पुरुषों से कठोरता की उम्मीद होती है और बदले में विनम्रता मिलती है, तो यह भी उन्हें असहनीय हो जाता है।

जैनेन्द्र की नारी पात्रों की एक अन्य विशेषता यह है कि सभी नारी पात्रों में बुद्धि और हृदय का संघर्ष अनिवार्य रूप से दिखाया गया है। 'सुनीता', 'कट्टो' और 'मृणाल' कभी प्रेमी की ओर झुकती हैं तो कभी अपने पति की ओर। जैनेन्द्र ने अपनी कहानियों में स्त्री के कई रूप दिखाए हैं। पत्नी, प्रेमिका, बेटी लेकिन हर रूप में स्त्री की किस तरह उपेक्षा की जाती है, उसे दबाया जाता है, उसके सम्मान को कुचला जाता है इसका यथार्थ चित्रण किया है। स्त्री को ही स्त्री के विरोध में दिखाया गया है। जैनेन्द्र के साहित्य में, स्त्री पात्र आधुनिक नारियों की झलक प्रस्तुत करते हैं। यद्यपि वे वर्तमान महिलाओं की तरह अधिकारों के लिए सभाओं, समितियों और आंदोलनों का सहारा नहीं लेती हैं, लेकिन उनकी जागरूकता और निरंतर संघर्ष उन्हें आधुनिक बनाता है। सही और गलत के अपने मानक स्थापित करके, वे समाज से अनुसरण नहीं करतीं बल्कि अपने मूल्यों का पालन करती हैं। परंपरागत मान्यताओं और आदर्शों को तोड़कर, वे एक नई परिभाषा गढ़ती हैं। अपने निर्णयों में दृढ़ और सामाजिक पाखंड से अलग, वे अपने मार्ग का स्वयं निर्माण करती हैं। समाज के दोहरे मापदंडों और खोखले आदर्शों को स्वीकार करने के बजाय, वे अहिंसक तरीके से अपने जीवन शैली में परिवर्तन लाकर

सामाजिक मूल्यों पर प्रश्न उठाती हैं। ईमानदारी से जीवन की कठिनाइयों का सामना करते हुए, वे कर्तव्यों का निर्वहन करती हैं। आत्मसंघर्ष और अहिंसक प्रतिरोध के माध्यम से, वे विरोध भी व्यक्त करती हैं।

इन नारियों ने अपने कर्तव्यों का पालन करते हुए जिस प्रकार नैतिकता और मर्यादा का विश्लेषण किया, जिस तरह समाज की पाखंडी संरचना को बेनकाब किया, वह भविष्य की सशक्त महिलाओं के लिए मार्ग प्रशस्त करता है। नियति की शिकार होने के बावजूद भी इन नारियों ने अपने लिए रास्ते बनाए या कम से कम रूढ़िवादी रास्तों के प्रति आपत्ति जताई। जैनेंद्र की कहानी में, स्त्री प्रेम को स्वीकार करती है, लेकिन जहाँ तक हो सके, वह विवाह की संस्था को बचाने की कोशिश करती है। जैनेंद्र की कहानी 'जाह्नवी' में, एक स्त्री अपने प्रेमी के इंतजार में हर दिन कौओं को रोटी खिलाती है। जाह्नवी रोटी खाने वाले कौओं से मिन्नत करती है कि वे उसके सारे अंग खा लें, लेकिन उसकी दोनों आँखों को छोड़ दें। वे आँखें उसके प्रेमी के इंतजार में हैं। जब इसी 'जाह्नवी' लड़की की शादी तय हो जाती है, तो वह अपने होने वाले पति को एक पत्र लिखकर अपने प्रेमी के बारे में बताती है। वह स्पष्ट रूप से कहती है कि वह उसकी जीवनसाथी बनने में असमर्थ है। हालाँकि, वह एक अनुगामिनी बनकर अपने कर्तव्यों को अच्छी तरह से निभा सकती है। संयोग से, जाह्नवी की इस ईमानदारी का सम्मान किया जाता है। लेकिन त्यागपत्र में, मृणाल की ईमानदारी ही उसकी परेशानियों का कारण बन जाती है। इस प्रकार यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि जैनेन्द्र अपनी कहानियों में स्त्री और प्रकृति के शोषण तंत्र को न केवल उजागर करते हैं बल्कि उनके विध्वंसकारी रूप का भी चित्र प्रस्तुत करते हैं।[5]

निष्कर्ष

अतः संक्षेप में कहा जा सकता है कि जैनेन्द्र जी की नायिकाओं में कामुकता और विवेक का संघर्ष सर्वत्र देखने को मिलता है। उनकी अधिकांश कहानियाँ मानसिक तनावों से ग्रस्त मनुष्य के अन्तर्मन की गहराईयों में छिपे दुःख, दर्द, साहस और संघर्षों से उत्पन्न कुंठा, असंतोष, हताशा, क्रोध और अंतर्द्वंद का वर्णन करती हैं। उनकी प्रत्येक कहानी संवेदनाओं के स्तर पर उतरकर पाठकों के मन को चकित, व्यथित और उत्तेजित कर देती है। वास्तव में, जैनेन्द्र की कहानियों में सामाजिक समस्याओं का वर्णन और वर्तमान के प्रति कटुता देखी जा सकती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची–

[1]आशीष यादव, जैनेन्द्र के कथा साहित्य में नारी चिन्तन के शाश्वत मूल्य, शोध मंथन, पृ. 990–991

[2]साक्षी है पीढ़ियाँः कुमार जैनेन्द्र, पूर्वोदय प्रकाशन नई दिल्ली, 1989 भूमिका से (कमलेश्वर)

[3]जैनेन्द्र कुमार, 'परख', पृष्ठ, 44

[4]गायत्री चौहान, जैनेन्द्र जी के उपन्यासों में नारी–संघर्ष के स्वरूप, पृष्ठ, 55

[5]सत्यम भारती, जैनेन्द्र की कहानियों में स्त्री और प्रकृति का स्वरूप, पृष्ठ, 72